गिल्बर्ट



लेखन व चित्रः एरिक गर्नी

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

गिल्बर्ट

लेखन व चित्रः एरिक गर्नी
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

हमारे बच्चों,

लैन्स, लॉरी, लैसी, तथा लॉरना को



गिल्बर्ट यतीम था।

एक बिल्ली माँ ने
उसे गोद लिया।



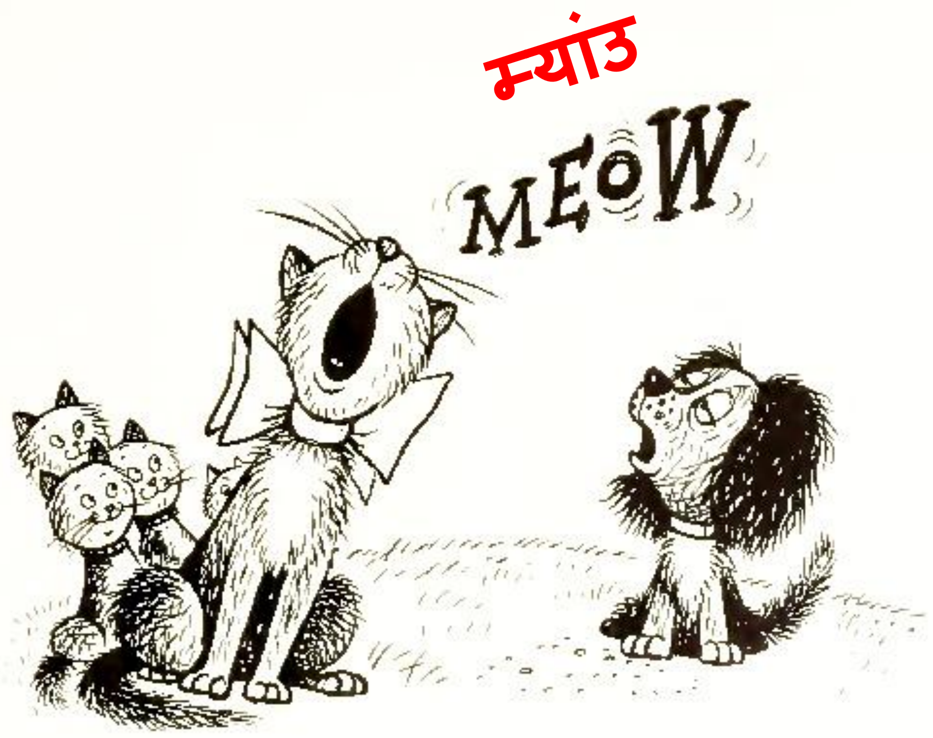
मुहल्ले के सभी दूसरे कुत्तों को बिल्लियों का पीछा कर उन्हें सताना पसन्द था।

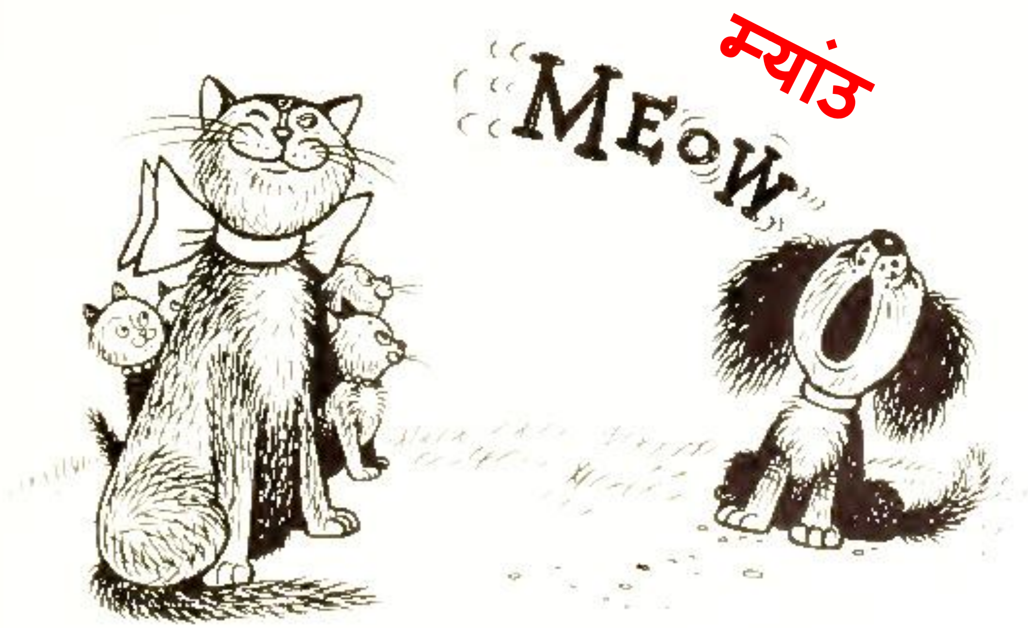


पर गिल्बर्ट को नहीं।



क्योंकि वह बिल्लियों के परिवार के साथ रहता था, उसने भौंकना सीखा ही नहीं था। वह एक मिमियाती-सी आवाज़ निकालता था, जो “म्यांउ” सी सुनाई देती थी।

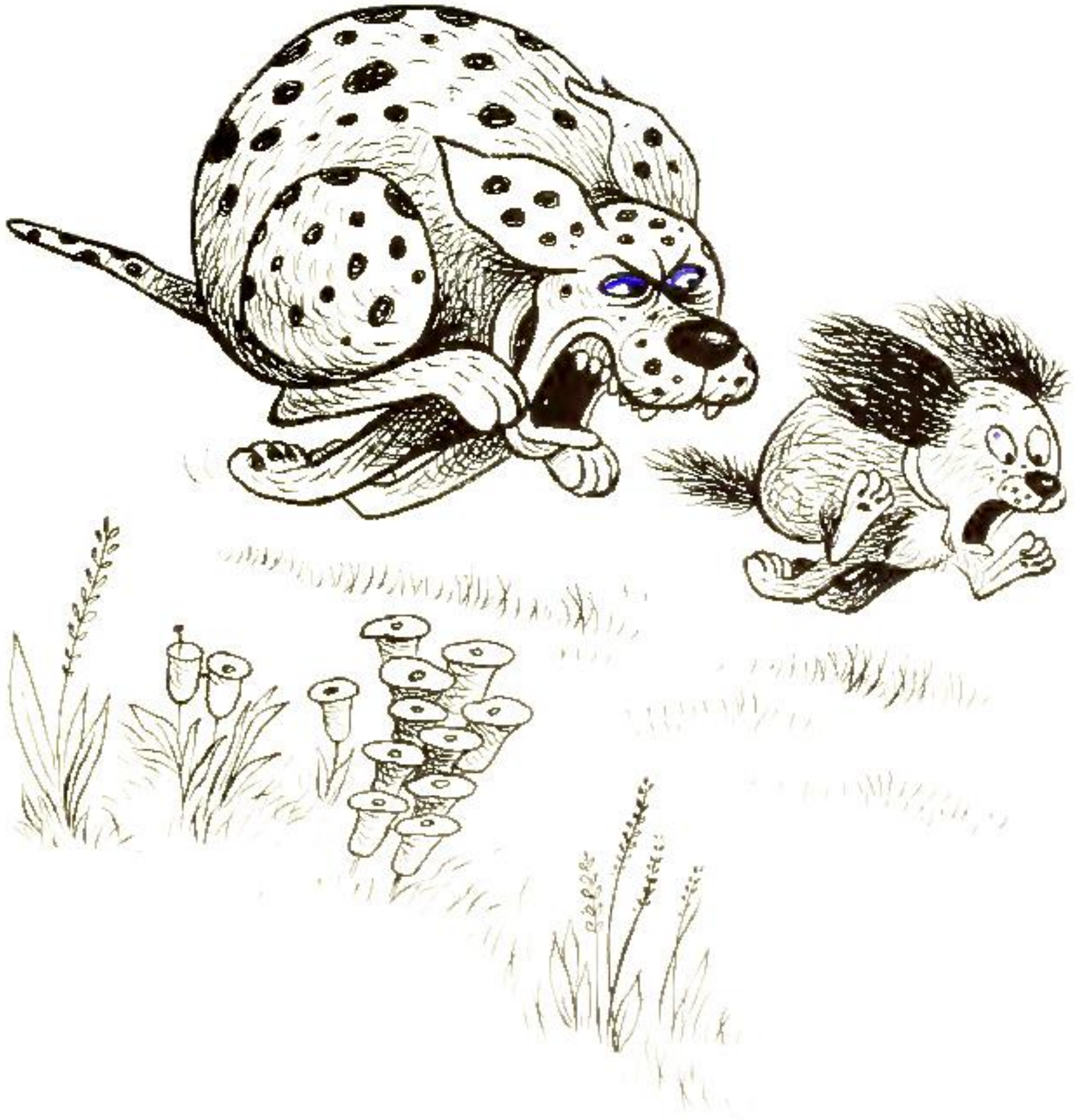




जब दूसरे कुत्तों ने गिल्बर्ट को सुना वे हंसे। उन्होंने उसका मखौल उड़ाया। उसके साथ बेरहम बरताव किया।



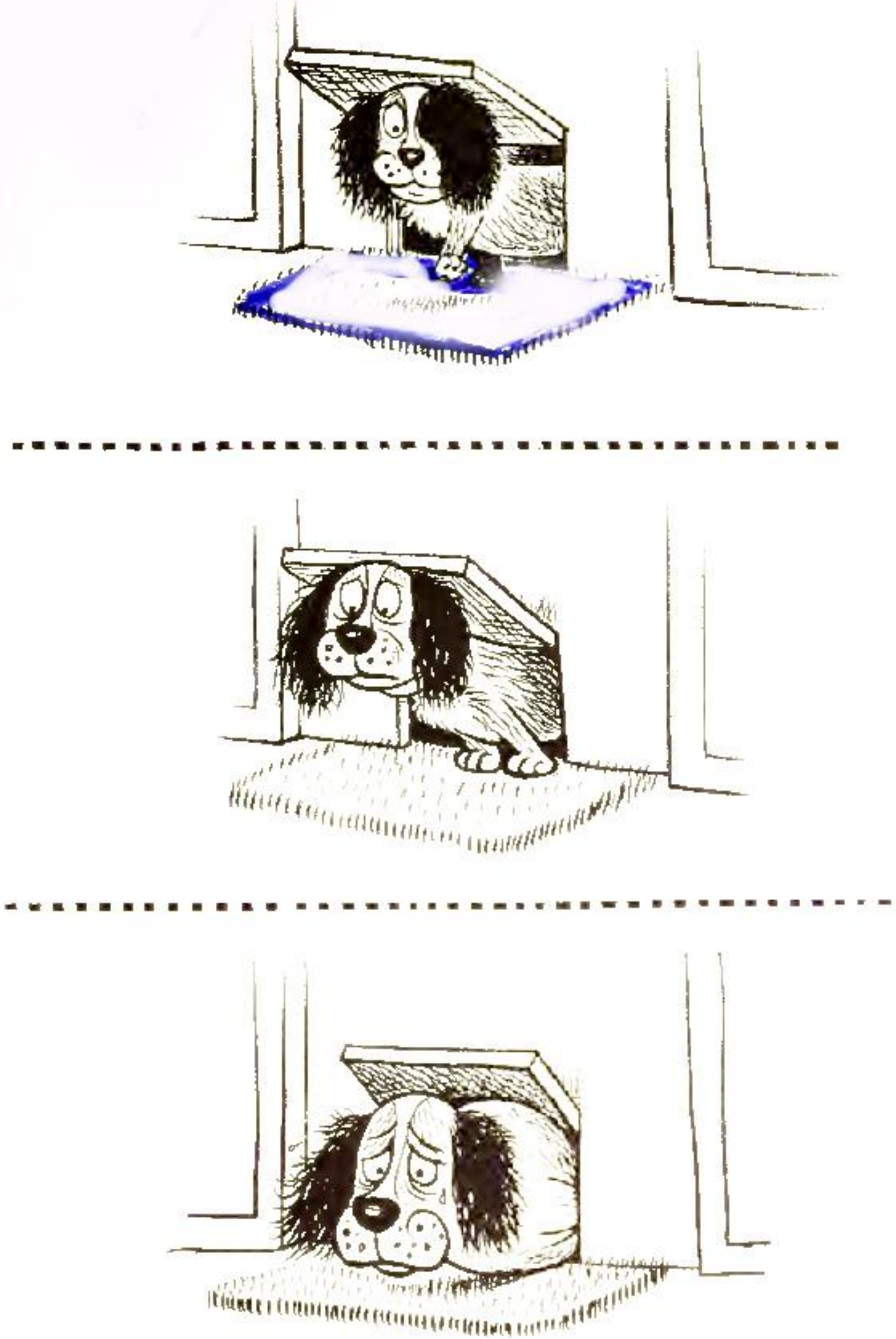
उन कुत्तों में जो सबसे बेरहम बरताव करता था, वह था मुहल्ले का धौंसबाज़ कुत्ता ईवान। वह खूब बड़ा और हट्टा-कट्टा था। वह दुनिया में किसी से नहीं डरता था। सिवा बादलों की कड़कड़ाती गरजन से।



जल्द ही गिल्बर्ट बड़ा होने लगा..

और बड़ा..

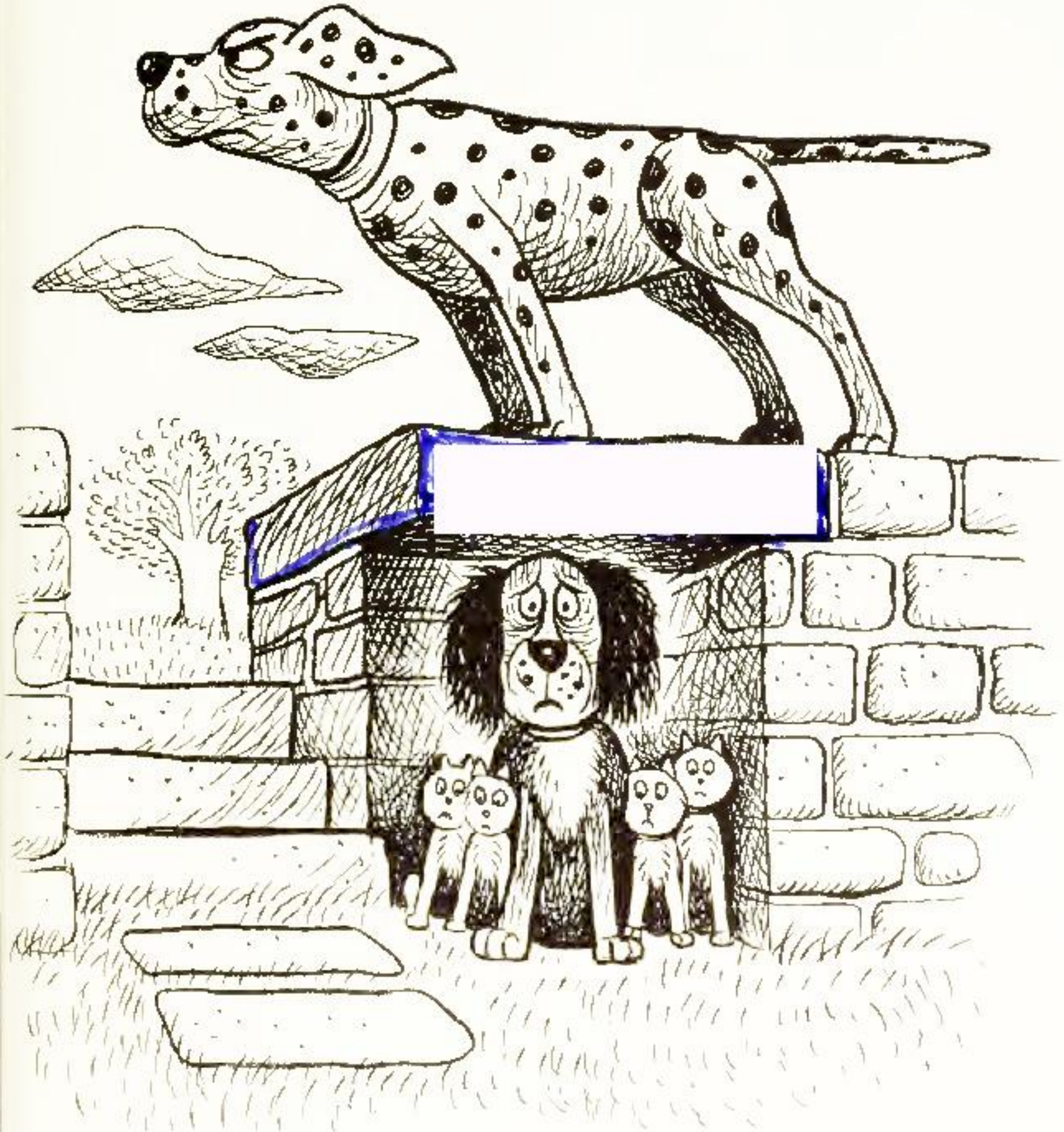
और-और बड़ा..



एक दिन उसके मालिक ने नई तख्ती बनाई। वह चाहता था कि गिल्बर्ट एक रक्षक कुत्ता बने। उसके घर-बार और बिल्लियों की रखवाली करे।



पर गिल्बर्ट खुद को रक्षक
कुत्ता मानता ही नहीं था।
वह तो खुद को एक
साधारण कुत्ता तक महसूस
नहीं करता था।



समय गुज़रने के साथ गिल्बर्ट को उदासी घेरने लगी। उसका खुद पर भरोसा कम से कमतर होता गया। चीज़ों में उसकी दिलचस्पी खत्म हो गई। बिल्लियों के खेलों तक कोई दिलचस्पी नहीं रही।



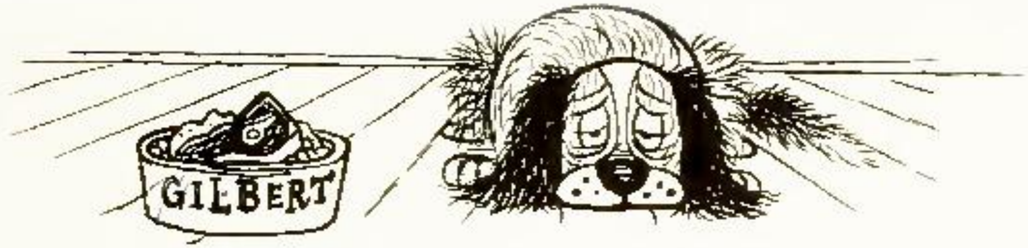
अब तो बिल्लियाँ भी
उससे कन्नी काटने लगीं।



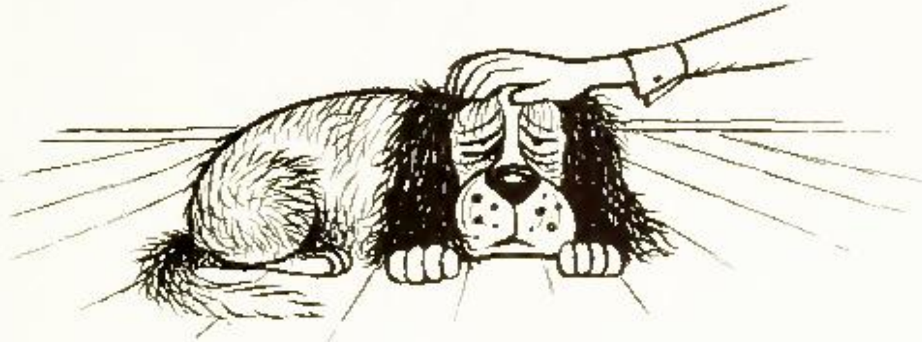
‘‘कोई बात नहीं, कोई भी पूरी तरह बे-दाग नहीं होता,’’ वह खुद से कहता। पर गिल्बर्ट में असुरक्षा की भावना बढ़ने लगी।



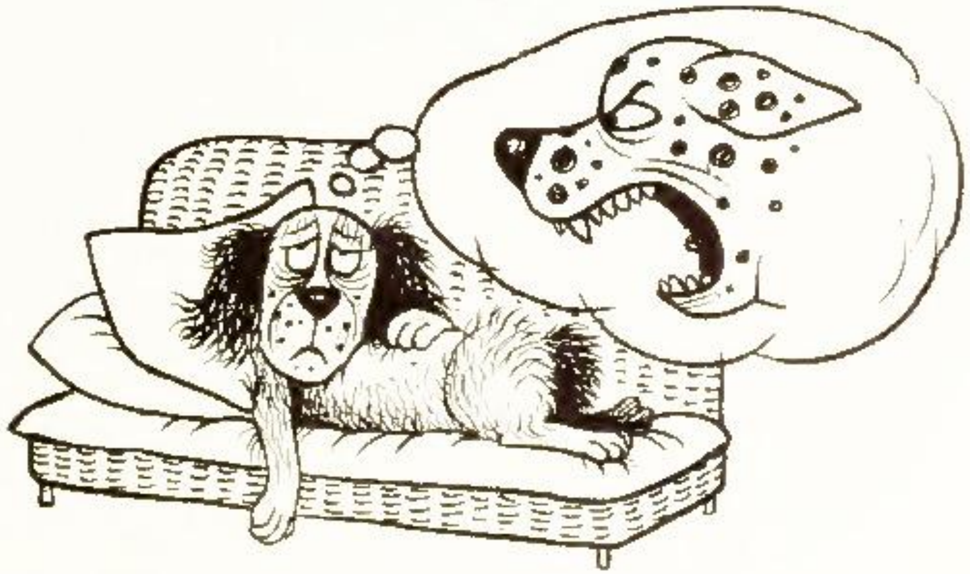
उसकी भूख खत्म हो चली..



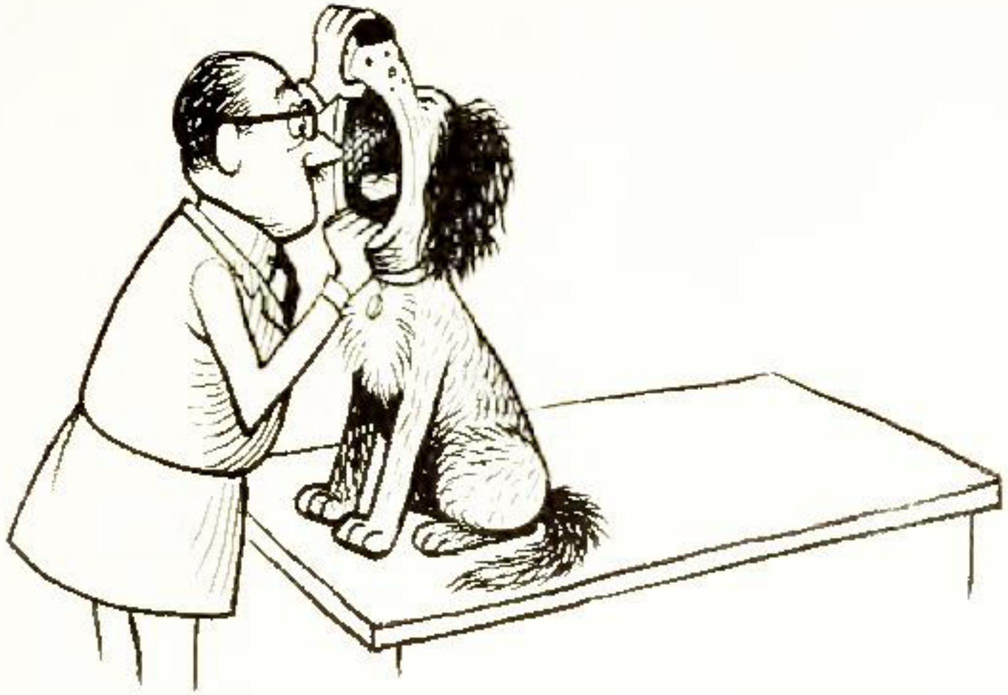
जब उसका मालिक प्यार
जताता, वह अपनी पूंछ तक
नहीं हिलाता..

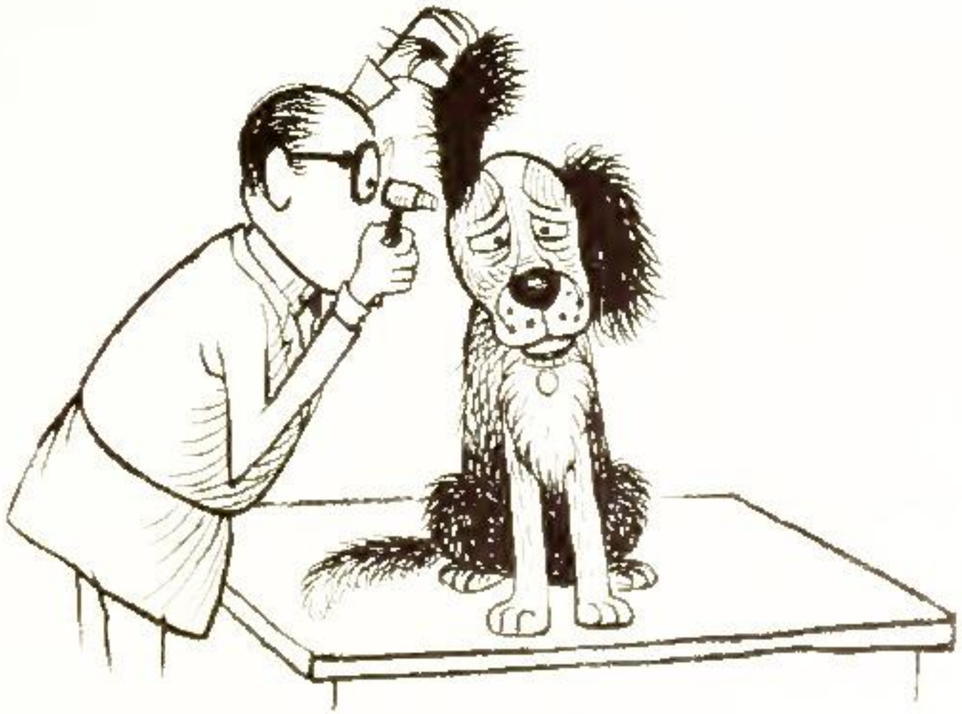


वह रात को सो तक नहीं पाता,
क्योंकि वह सपने में ईवान के
उसके पीछे पड़ने से डरता था..



गिल्बर्ट का मालिक उसे पशु-चिकित्सक के पास ले गया, जिसने उसे ठीक से जाँचा। उसने कहा कि गिल्बर्ट थोड़ा थका-सा है। सो, उसने गिल्बर्ट को कुछ विटामिन की गोलियाँ खिलाने को कहा।





पर गिल्बर्ट को विटामिन की
गोलियाँ अच्छी नहीं लगीं।





क्योंकि गिल्बर्ट को गोलियों से
कोई फ़ायदा नहीं हुआ, उसके
मालिक ने तय किया कि शायद
उसकी तकलीफ़ मानसिक है।

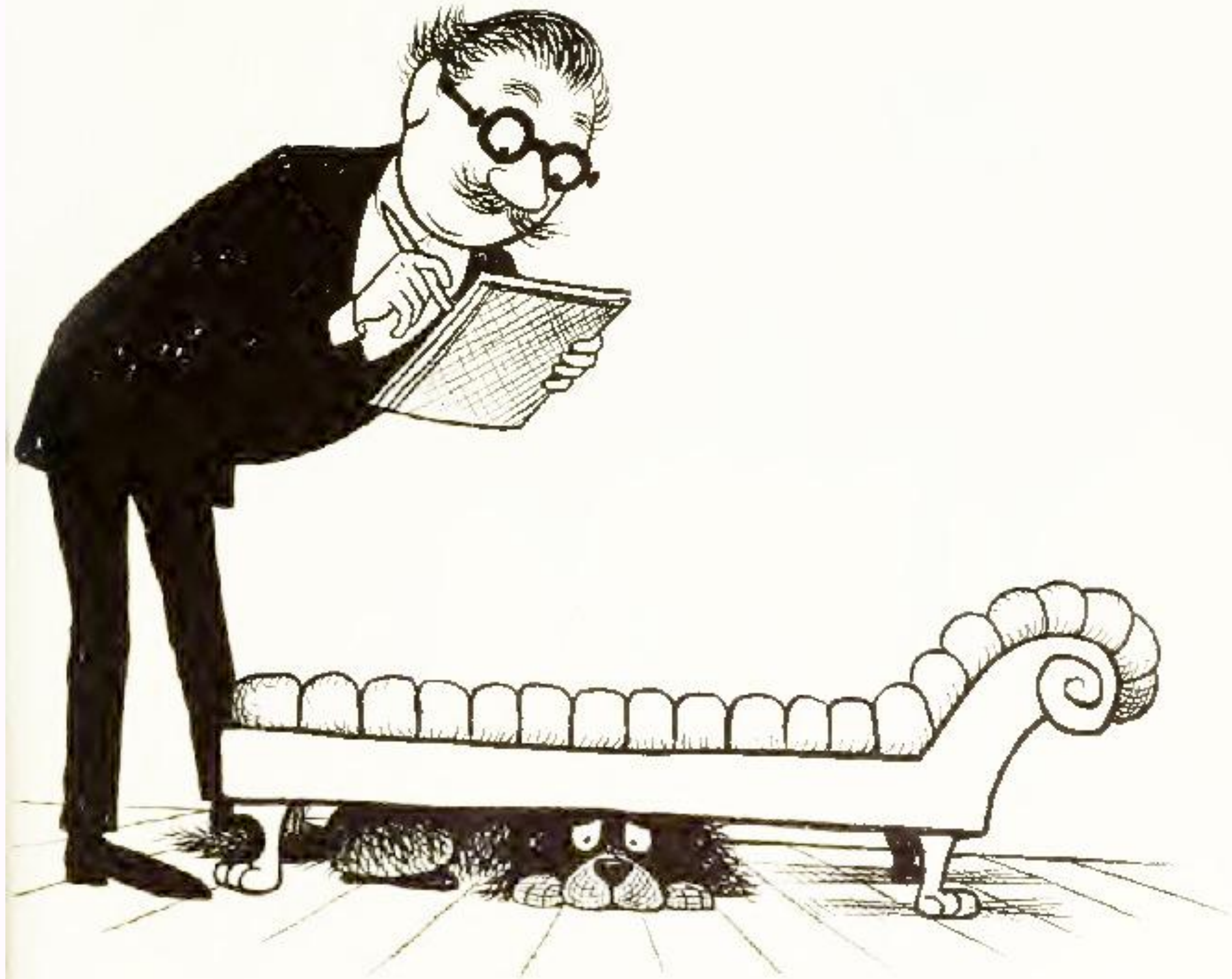


सो मालिक ने उसे ऐसे चिकित्सक के पास भेजा जिसने उन कुत्तों की मदद की थी जो खुद को एकदम बेमेल महसूस करते थे।

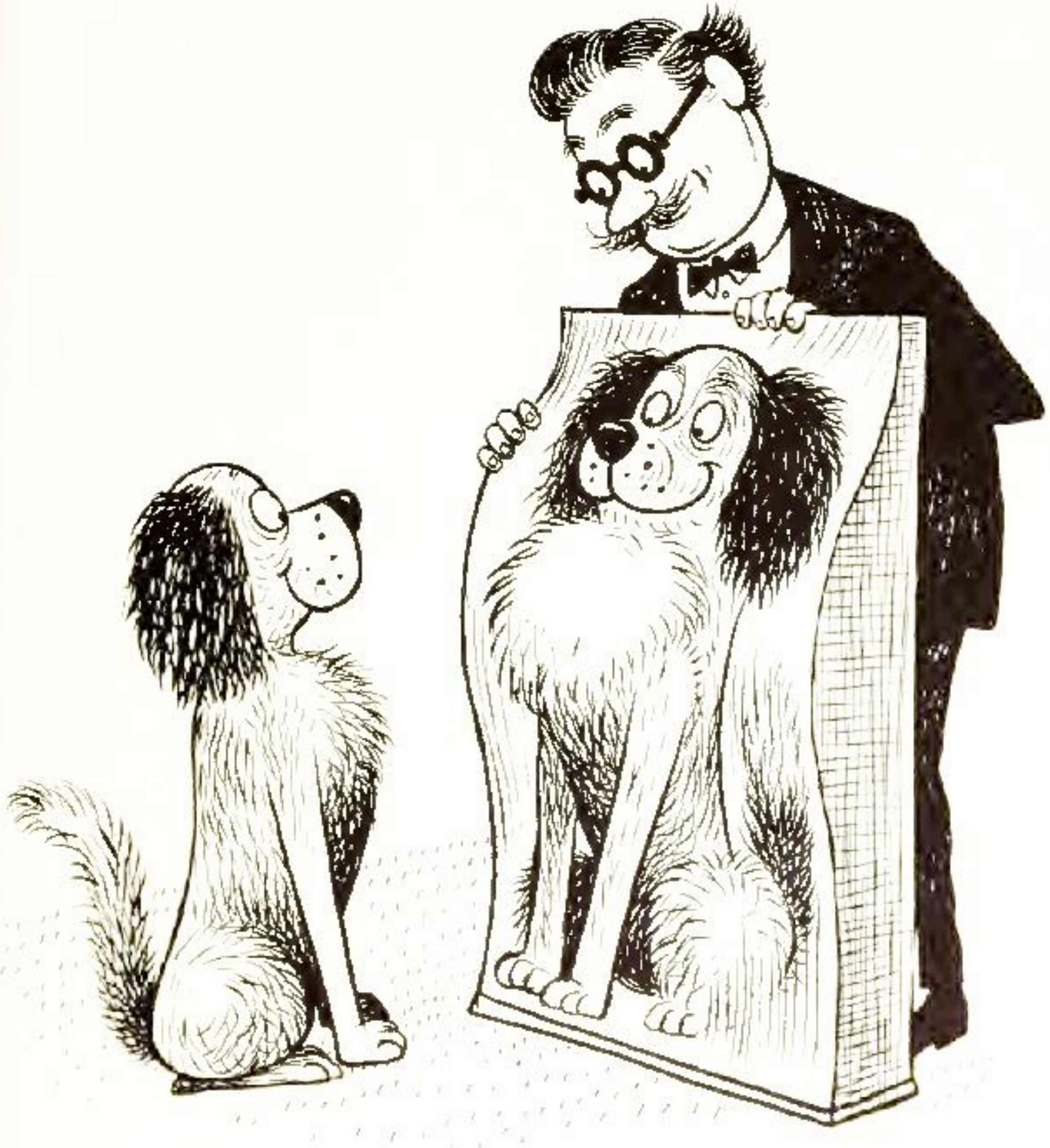


चिकित्सक ने गिल्बर्ट के साथ लम्बे समय तक काम किया।

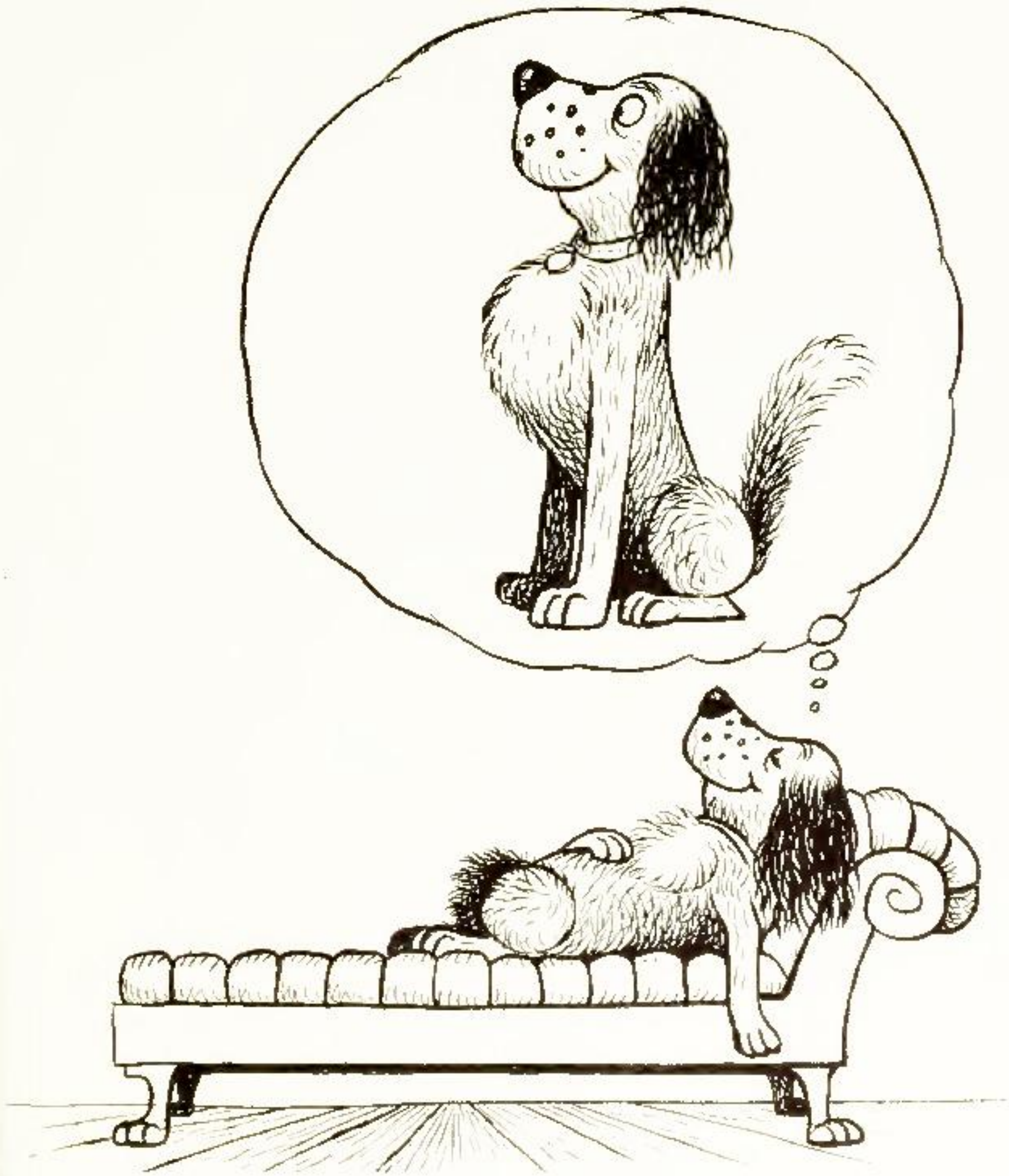
(हर सप्ताह 50 मिनटों के तीन सत्रों में।)



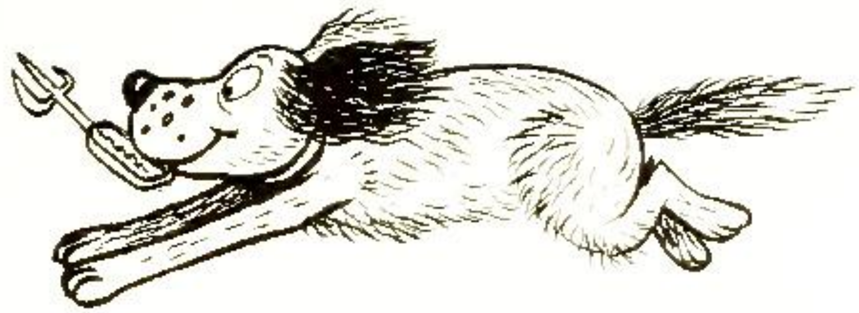
उसने धीरे-धीरे गिल्बर्ट का आत्म-
विश्वास बढ़ाया। एक नई आत्मछवि
विकसित करने में उसकी मदद की।



उसने गिल्बर्ट की हौसला अफ़ज़ाई की ताकि वह खुद को बहादुर, निडर और शानदार कुत्ता माने, जैसा वह असल में था भी। और गिल्बर्ट यह सब मानने लगा।



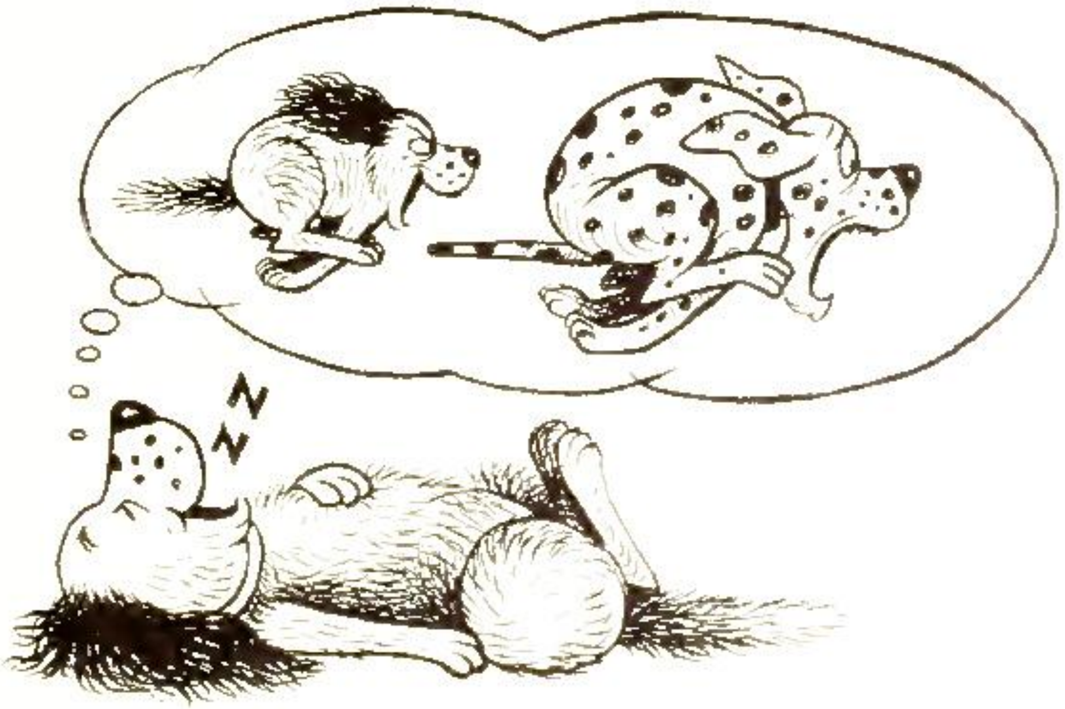
जल्द ही गिल्बर्ट की भूख लौट आई..

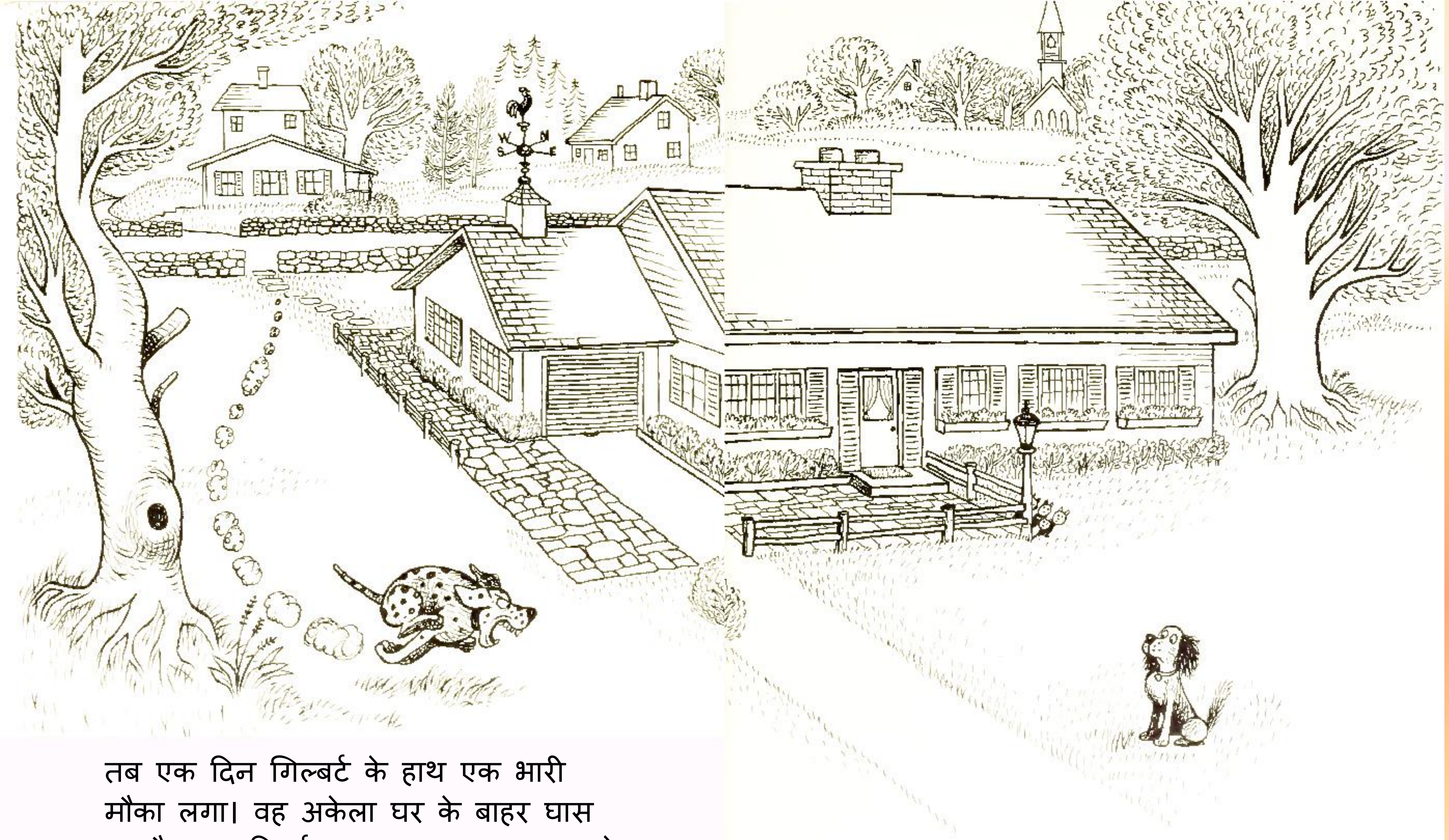


जब मालिक प्यार जताता, वह तरह-तरह से खुशी जताने लगा..



अब वह चैन से सोता, क्योंकि अब वह सपने में खुद ईवान को डरा कर भगता होता..





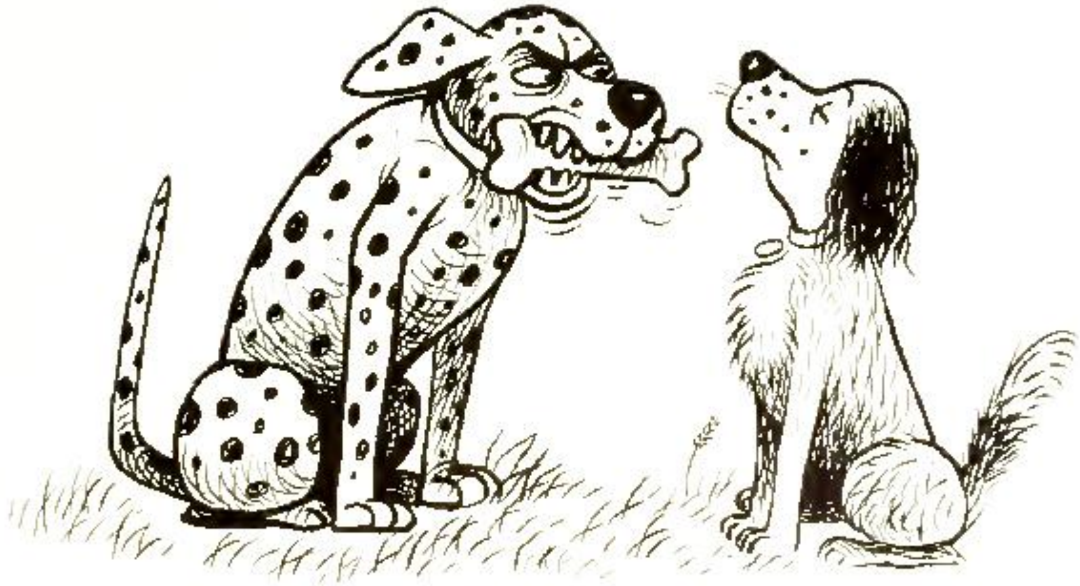
तब एक दिन गिल्बर्ट के हाथ एक भारी मौका लगा। वह अकेला घर के बाहर घास पर बैठा था कि ईवान अचानक हमला करने गिल्बर्ट की ओर दौड़ा आया।

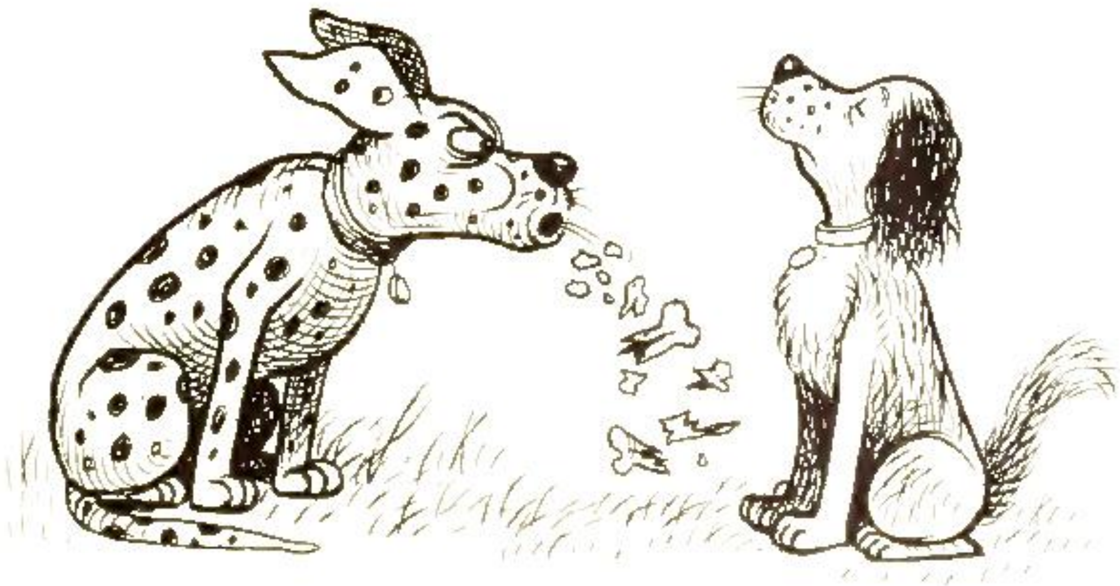
गिल्बर्ट कुछ घबराया। पर मुड़ कर भागने के बदले डटा बैठा रहा। वह डॉक्टर स्नाउज़र ने जो कुछ कहा था, उसी बात पर सोचता रहा।





ईवान ने उसे डराने के
वास्ते अपने पैने दाँत
दिखाए। पर गिल्बर्ट जस
का तस खड़ा रहा।





इसी बीच आसमान गर्मियों में आने वाले तूफान से गहराने लगा। पर दोनों कुत्तों ने उस पर ध्यान ही नहीं दिया।



अब गिल्बर्ट की बारी थी।
उसने एक लम्बी, गहरी
साँस खींची..





और एक खालिस कुत्ते की तरह
ज़ोर से भौंका - और ठीक उसी पल
एक भयंकर, ज़बरदस्त बिजली की
कड़कड़ाहट भी गूंजी।

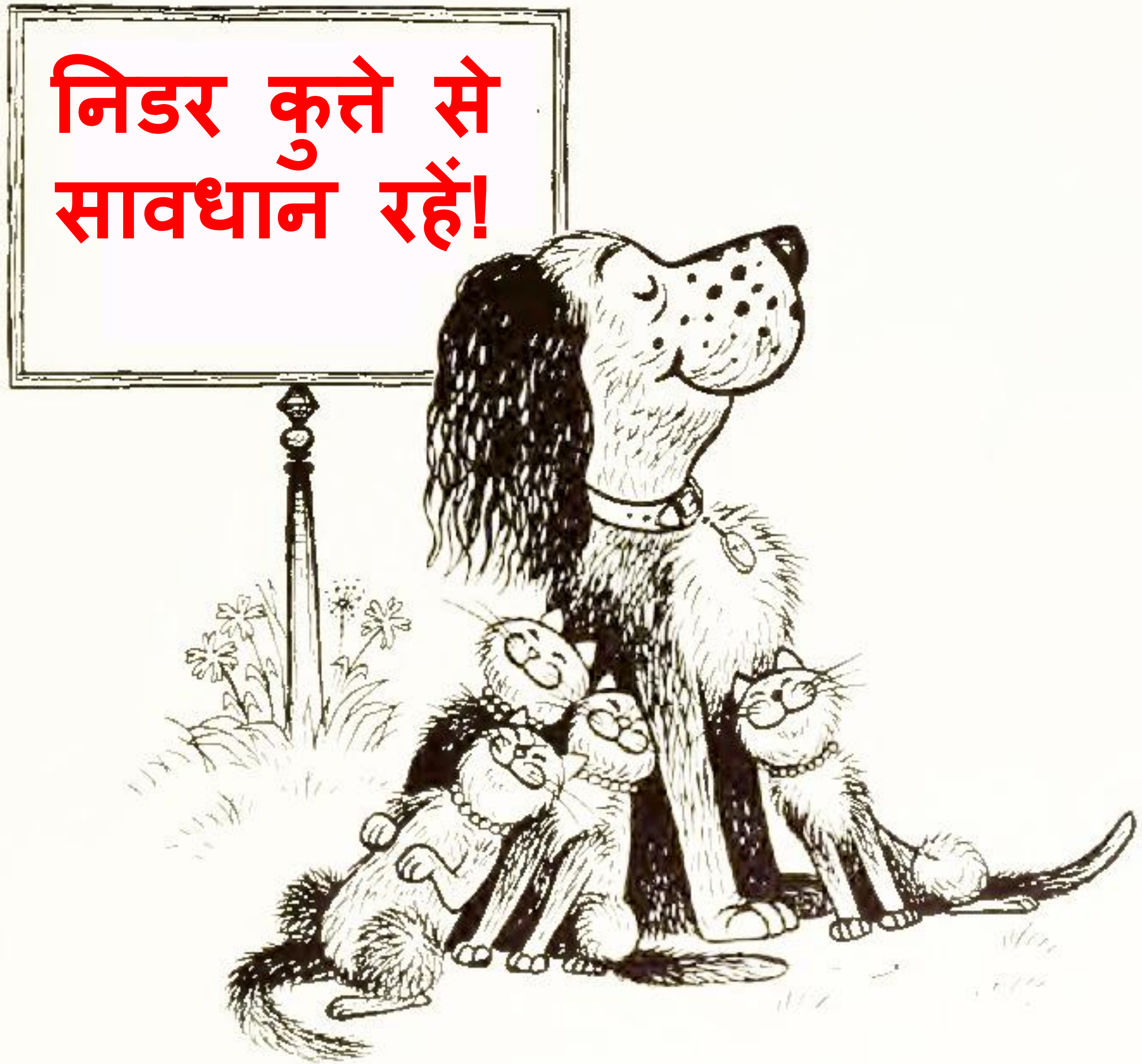
ईवान गिल्बर्ट की कड़कड़ाहट भरी भौंक से इस कदर दहल गया कि वह दुम दबा अपने घर को दौड़ा। और पलंग के नीचे दुबक कर छिप गया। उसने इसके बाद फिर कभी गिल्बर्ट या बिल्लियों को नहीं सताया।



गिल्बर्ट को आख़िरकार यह महसूस हुआ कि वह सचमें एक निखालिस कुत्ता है। और तो और बिल्लियों को भी उस पर बेहद फ़क्र हुआ.. यह सिद्ध करता है कि ज़रा-सी हौसला अफज़ाई, और कुछ किस्मत का साथ, बहुत दूर तक जाता है।

(खासकर तब, जब आप एक बेमेल कुत्ते हो।)




निडर कुत्ते से
सावधान रहें!